Nav Man Bojha

Mrs Chandrakala Leeladhur

NAV MAN BOJHA

नौ मन बोझ

(Short story : **HINDI)**

(**हिन्दी** कहानी)

Author : **MRS. CHANDRAKALA LEELADHUR**

लेखिका - **श्रीमती चन्द्रकला लीलाधर**

नौ मन बोझ

(**हिन्दी** कहानी)

लेखिका - **श्रीमती चन्द्रकला लीलाधर**

चंदू द्विविधा में था, जैसेकि वह नौ मन बोझ से दबा था। उसे समझ नहीं आ रहा, कि क्या करे? उसे पता था कि चुप रहकर घर में बैठ जाना स्वयं के साथ अपने ही और लोगों के जीवन के लिए खतरा बनना था और परीक्षण करवा लेने पर दस-पंद्रह दिनों के एकान्तवास की परेशानी लेनी है। उसे यह भी मालूम था, कि यदि वह आज कष्ट सहकर सम्भल जाएगा, तो आगे की सुरक्षा हो सकती है और लापरवाही बरती, तो शायद खुद तो खुद, औरों को भी लेकर डूब सकता है। इस निःस्थापित भय और प्रमाद के कारण उसे शायद पछताने का मौका भी न मिले।

चंदू का कोई दोष नहीं था। उससे कोई त्रुटि भी नहीं हुई थी, पर संग से हो गया हो। इसी बात की चिंता थी। उसका दूर का चाचा भंडा दो महीने की छुट्टी विदेश में बिता आया था। उस समय तक कोविद-१९ चीन से पर्यटकों की साँसों में चिपककर यूरोप, अमेरिका, अफ़्रीका आदि देशों में फैल चुका था। यह रोग इतना संक्रामक था कि धरते ही साँस को दबोचकर रोगी का गला घोंट देता था। यह चीन के वुहान शहर में हजारों का गला घोंट चुका था। विश्व-स्वास्थ्य-संगठन ने इसे महामारी घोषित कर दिया।

कोविद-१९ लाइलाज था। जब तक रोग का पता चले, तब तक रोगी की साँस टूटने की स्थिति में पहुँच गई होती थी। आज इस वायरस से संक्रमित हुए, तो दस-पंद्रह दिन बाद इसके लक्षण दिखाई देते थे। चीन की सरकार ने वुहान शहर को लॉकडाउन कर दिया। लॉकडाउन से पहले पर्यटक अपने-अपने देश लौट गए। उनके साथ यह महामारी भी सफ़र कर गई। अपने परिचितों के साथ दुनिया के लोगों ने इस अदृश्य मेहमान की मेहमान-नवाज़ी गरम-जोशी से किया ।

जब तक कोई लक्षण नहीं, तब तक लोग बेधड़क अपने देश में घूमते और परिजनों से मिलते रहे। रोग अपना रंग दिखाए, तब तक वे कइयों को यह रोग दे चुके होते थे। ऐसा ही भंडा था। वह अपने देश में कोविद-१९ से सकारात्मक पहला रोगी पाया गया। उसी दिन उसके सम्पर्क में आए और दो परिजन भी सकारात्मक निकले। फिर तो संक्रमण का सिलसिला और दायरा बढ़ा। सरकार ने प्रधानमंत्री की पहल पर इसका फैलाव रोकने के लिए पूरे देश में पूरा लॉकडाउन जारी कर दिया।

स्वास्थ्य-मंत्री और स्वास्थ्य-निदेशक जनता से रोज़ निवेदन करते, "यदि किसी को कोविद-१९ के लक्षण दिखाई दे, या कोविद-१९ से संक्रमित किसी रोगी के सम्पर्क में आए हों, तो ८९२४ पर तुरन्त सूचित करें। कोविद-१९ के परीक्षण के विशेष डॉक्टर आपकी सेवा में शीघ्र आपके घर उपस्थित हो जाएँगे।"

यह बात आम हो गई थी, कि संक्रमित लोगों के सम्पर्क में आए लोगों को, चाहे वे सकारात्मक हों या नकारात्मक, कारांटाइन या पृथक वार्ड में रख दिया जाता था। इसी एकान्तवास का भय चंदू के मन में द्विविधा उत्पन्न कर रहा था।

चंदू भंडा के सम्पर्क में आया था। उसने हाथ तो नहीं मिलाया। हाथ मिलाने की उसकी फितरत नहीं थी। वह सभी को हाथ जोड़ता था। कभी किसी मिनिस्टर ने हाथ मिलाते-मिलाते उसको भी हाथ बढ़ाया था, किन्तु चंदू ने उसको भी हाथ ही जोड़े थे। उसने भंडा से हँस-हँसकर बातें की थीं।

श्वास-प्रश्वास के संग निकल रही शारीरिक नमी के साथ यह वायरस फैलता है। चंदू को इस बात

का डर था, कि शायद वह भी कोविद-१९ से संक्रमित हो गया हो। उसके परीक्षण के निवेदन का मतलब था पक्षभर की कारांटाइन। चंदू को अपने आह्लादपूर्ण क्षण के बदले एकान्तवास का बन्धन गवारा नहीं था।

इसी उधेड़-बुन में दो दिन निकल गए। चंदू के स्वास्थ्य पर कोविद-१९ के संक्रमण के लक्षण नहीं दीखे, फिरभी तीसरे दिन उसने निश्चय किया, 'कोविद-१९ का परीक्षण करा लेना चाहिए। चौदह दिनों तक घर के सुख से वंचित रहना पड़ेगा, पर निश्चित हो जाएगा। 'यदि बीमार पाया जाऊँ, तो इलाज होगा और न रहूँ, तो निश्चिंत हो जाऊँगा। परिजन हर हालत में बचे रह पाएँगे और मैं इस द्विविधा जैसी मानसिक रोग से उबर जाऊँगा।' इस निश्चय के बाद उसने तुरन्त अपने मोबाइल से कोविद-१९ के विशेष टीम को अपनी स्थिति की सूचना दी।

करीब दो घंटे बाद चंदू के द्वार पर एक एम्ब्युलेंस रुका। उस समय माँ आँगन में रस्सी पर धुले कपड़े फैला रही थी। गाड़ी से एक नर्स उतरी। उसने माँ से पूछा, "चाची ! चंदू यहीं रहता है, क्या?"

"रहता तो यहीं है, पर बात क्या है?" एम्ब्युलेंस देखके माँ का माथा ठनका।

नर्स ने फिर पूछा, "उसे बुखार, खाँसी या साँस लेने की तकलीफ़ तो नहीं हो रही?"

"नहीं नहीं, वह तो भला चंगा है," कहकर माँ ने आवाज़ दी, "चंदू ! तुझे कोई तकलीफ़ है क्या?"

चंदू बाहर निकला। उसने कहा, "अभी तो नहीं, पर आगे हो सकती है। इसी बात का निश्चय करने के लिए मैं ने इनको फ़ोन किया।"

"किस बात का निश्चय करने के लिए?" माँ घबराने लगी थी।

"कोरोना का।" चंदू शान्ति से बोला।

"कोरोना?" जैसे कि माँ के पैरों तले ज़मीन खिसक गई। वह आगे बोली, "हे राम ! कोरोना? क्या तुझे कोरोना लग गई? कब? कैसे? कहाँ गया था तू? हाय ! मेरा भाग्य फूट गया। जवान बेटे को कोरोना।" उसकी आँखों से आँसू टपके।

"माँ ! रोती क्यों हो? चिन्ता की कोई बात नहीं, परन्तु सावधानी ज़रूरी है," चंदू ने माँ को समझाने की कोशिश की। तब तक गाड़ी से एक डाक्टर और एक पुरुष नर्स भी उतर आए। चंदू ने आगे कहा, "वे भंडा चाचा हैं न, जो हाल ही में विदेश से लौटे हैं, पता चला, उनको कोरोना हो गयी है।"

आगे डॉक्टर ने कहा, "यह बीमारी हाथ मिलाने या एकदम पास से बात करने से दूसरे को लग सकती है।"

"हाँ माँ ! एक बार काफ़ी देर तक चाचाजी से बात की थी। तब पता नहीं था, कि वे कोरोना सकारात्मक हैं या नकारात्मक ।" चंदू ने अपनी बात रखी।

"इसलिए एक जिम्मेदार नागरिक के नाते चंदू ने हमें सूचित किया और हम इसका टैस्ट लेने आए।" पुरुष नर्स ने कहा।

"घबराने की बात नहीं है।" डॉक्टर ने फिर कहा, "अभी हम टैस्ट के लिए इसका सेम्पल लेंगे। कल तक रिज़ल्ट आ जाएगा। अगर सकारात्मक पाया गया, तो विशेष इलाज होगा और नकारात्मक रहा तो निश्चिन्त और सब लोग सुरक्षित।"

डॉक्टर की बात से माँ को ढाढस पहुँचा। उसने कहा, "हाँ, आप ठीक कह रहे हैं।"

फिर वे चंदू को एम्ब्युलेंस के अन्दर ले गए। चंदू के पास आने से पहले उन्होंने मुँह पर मास्क और हाथ में दस्ताने लगा लिये। चंदू के हाथों को स्प्रे से सानिटाइज्ड किया। फिर उसे एक आसन पर बिठाया। वैन के अन्दर का दृश्य एक स्वास्थ्य-प्रयोगशाला ही था। गले की थूक लेनेवाला और उसका सहयोगी पूरे ढके थे। मुँह पर मास्क, हाथों में दस्ताने और सिर से पैर तक, पूरे शरीर पर विसंक्रमित सुरक्षा-गाऊन।

केवल आँखें ही दीखती थीं। सेम्पल एक विशेष किट में लिया गया, बड़ी सावधानी से।

नाम, पता, उम्र और फ़ोन नम्बर लिखकर सेम्पल लेने में कुछ मिनट लगे। अन्त में डॉक्टर चंदू को दो मास्क देकर बोले, "तुम तो समझदार हो, फिरभी यदि किसी से बात करनी हो, तो मास्क लगा लेना चाहिए। सबसे एक मिटर की दूरी बनाकर रहोगे, तो सबका भला होगा। बीमारी के विषाणु दूसरे तक पहुँच ही नहीं पाएँगे। अपने हाथों को बार-बार सानिटाइज़ किया करो या पानी उपलब्ध हो, तो साबुन से धो लिया करो। स्वास्थ्य के लिए सफ़ाई आवश्यक है।"

अन्त में सब ने हाथ जोड़कर नमस्ते की और कहा, "सहयोग के लिए धन्यवाद। कल-परसों तक परिणाम का पता चल जाएगा। तुम को पहले फ़ोन द्वारा स्थिति की सूचना दी जाएगी। फिर तो फिर। नमस्ते।"

चंदू नमस्ते करके वैन से उतर गया। बाहर माँ और परिवार के और लोग जमा हो गए थे। उधर वैन गया, इधर चंदू पर प्रश्नों की बौछार हुई।

माँ ने पूछा, "बीमारी का पता चला क्या?", तो भैया ने कहा, "डॉक्टर ने अन्दर क्या किया?" बाकी लोगों की कुतूहल और जिज्ञासु दृष्टि चंदू के उत्तर की प्रतीक्षा बेसब्री से करने लगी।

चंदू ने इत्मीनान से माँ को कहा, "माँ ! मैं बीमार तो नहीं हूँ। बीमारी का पता तुरन्त कैसे चलेगा? वे तो अभी केवल गले की थूक लेकर गए हैं। काँदोस की बड़ी प्रयोगशाला में उसका परीक्षण-विश्लेषण करने के बाद पता चलेगा। कल शाम तक परिणाम की सूचना देंगे।"

"फिर ये मास्क किस लिए?" भाभी ने पूछा।

"बीमारी से बचने के लिए।" चंदू ने सब को डाक्टर की बात बताई, "डॉक्टर ने बताया, कि जब हम साँस छोड़ते हैं या बातें करते हैं, तो हवा के साथ मुँह से छोटी-छोटी बूँदें भी निकलती हैं। उन बूँदों के साथ बीमारी के विषाणु भी निकलकर पासवाले पर पड़ जाते हैं। इस तरह यह बीमारी एक से दूसरे-तीसरे तक पहुँच जाती है। मास्क लगाने से ये विषाणु बाहर फैलेंगे नहीं और बाहर के हमारे भीतर नहीं आएँगे। सभी सुरक्षित रहेंगे।"

"तब तो हम सभी को मास्क लगाए रहना चाहिए।" माँ ने निदान दे दिया। फिर सभी मास्क के प्रबन्ध में लग गए।

दूसरे दिन जब कोई फ़ोन नहीं आया, तो तीसरे दिन चंदू ने ही फ़ोन किया। फ़ोन उठानेवाले ने आवश्यक सूचना लेकर कहा, "अभी मैं पता लगाकर पाँच-दस मिनट में आपको सूचित करता हूँ।"

नौ मिनट बाद सूचना आई, "हमें खेद है, कि विलम्ब हुआ, किन्तु प्रसन्नता है, कि आप का नतीजा नकारात्मक है।"

चंदू के मुख से निकला, " नकारात्मक, धन्यवाद। लाख-लाख धन्यवाद।" उसने फ़ोन रख दिया। यह सूचना पाकर उसके साथ पूरे परिवार के सिर से जैसे नौ मन बोझ उतर गया।

o